2

हम यीशु के विषय में कैसे जान सकते हैं? (1)

यदि हमें यीशु के विषय में ऐतिहासिक प्रश्न पूछने हों तो हमें यह पता लगाना आवश्यक है कि वे प्रश्न कहां से मिलते हैं और उन से किस प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है। ये स्रोत अधिकतर प्राचीन लेखों के रूप में हैं, जिनमें यीशु का उल्लेख है। यथार्थता की खातिर हम गैर मसीही स्रोतों के साथ आरम्भ करेंगे।

अधिकतर प्राचीन गैर स्रोत यीशु के विषय में बताते नहीं हैं। यह आश्चर्य लग सकता है क्योंकि आज संसार में लोग यीशु के बारे में विस्तृत जानकारी रखते हैं। यह कैसे हो सकता है कि उसके अपने समय के और उससे थोड़ी देर बाद के लेखकों ने उसे नज़रअन्दाज़ कर दिया? इसका उत्तर यह है कि यीशु गुमनामी में रहा और मरा इसलिए कि उसके समकालीनों में से अधिकतर को उसका पता भी नहीं चला। वह रोमी साम्राज्य के एक दूरगामी इलाके में एक निर्धन यहूदी परिवार में जन्मा। जहां तक हम बता सकते हैं वह अपने छोटे से देश में बचपन में जाने और उसके माता-पिता के द्वारा उसे हेरोदेस के कातिल क्रोध से बचाने के लिए मिस्र में ले जाने के अलावा और कहीं बाहर नहीं गया (मत्ती 2:13-15)। उसकी मृत्यु के आस-पास की घटनाओं को उनके जानने वालों ने यहूदियों के बीच के टंटों के परिणाम के रूप में समझा जिन्हें उनके समकालीन गैर यहूदी तुच्छ समझते थे। इसलिए यह सचमुच में आश्चर्य की बात नहीं है कि अधिकतर प्राचीन लेखकों ने उसकी ओर ध्यान क्यों नहीं किया, बल्कि यह आश्चर्य की बात हो सकती है कि उन में से किसी ने उस पर ध्यान दिया हो!

परन्तु कइयों ने दिया। ये लोग काफ़िर (जो न तो मसीही और न ही यहूदी हैं) लेखक और यहूदी लेखकों की श्रेणियों में आते हैं।

यीशु के विषय में काफ़िर स्रोत

टेसिटुस दूसरी शताब्दी का एक प्रसिद्ध यहूदी इतिहासकार था। वर्ष 115 के लगभग उसने रोम की उस बड़ी आग के विषय में जो 64 ईस्वी में लगी थी और उसके बारे में अफ़वाह थी कि स्वयं नीरो ने उसे लगाने की आज्ञा दी थी, लिखा:

> परन्तु सभी मानवीय प्रयास, सम्राट के सभी बड़े-बड़े उपहार और देवताओं की पृष्टियां इस डरावने विश्वास को खत्म नहीं कर पाए कि वह अग्निकांड एक आदेश के कारण था। जिस कारण इस रिपोर्ट से पीछा छुड़ाने के लिए नीरो ने आरोप जन-साधारण द्वारा क्रिश्चियन (यानी मसीही) कहे जाने वाले उस वर्ग पर जिससे उनके घृणित कामों (*flagitia*) के लिए घृणा की जाती थी आरोप लगा कर उन्हें घोर यातनाएं दीं। ख्रिस्तुस, जिससे उन्हें यह नाम मिला था, तिबरियास के शासनकाल में हमारे एक हाकिम पुन्तियुस पिलातुस के हाथों भारी दण्ड दिए जाने से, इस शरारती अन्धविश्वास पर थोड़ी देर के

> लिए तो रोक लग गई थी, फिर से न केवल हर बुराई के आरम्भ यहूदिया में बल्कि रोम में भी निकल आया, जहां संसार के हर कोने की सब घृणित और शर्मनाक बातें केंद्र में मिल जाती है और वे प्रसिद्ध हो जाती हैं। इसी कारण अपनी गलती को मान लेने वालों को पहले गिरफ्तार ही किया गया।[1]

टेसिटुस मसीहियत का प्रशंसक नहीं था, अत: हम यीशु या उसके अनुयायियों के पक्ष में पक्षपाती होने का आरोप नहीं लगा सकते। तौभी उसके कथन नये नियम से यीशु के विषय में कुछ जानकारी की पुष्टि करते हैं: कि उसे ''**ख्रिस्तुस**'' (''ख्रिस्त'' के लिए लातीनी शब्द) कहा जाता था कि उसे ''तिब्रयुस ... के शासन में'' कत्ल किया गया था (देखें लूका 3:1)। उसे मारने वाला ''पुन्तियुस पिलातुस'' था जो उस समय यहूदिया का हाकिम था, जैसा कि नया नियम भी बताता है।

स्युटोनियुस एक और रोमी इतिहासकार था, जो पहली सदी के अन्त में और दूसरी सदी के आरम्भ में हुआ। उसने यीशु के विषय में सम्राट क्लोदियुस द्वारा लगभग 49 ईस्वी में जारी किए गए आदेश पर टिप्पणी में उसका उल्लेख अवश्य किया: ''कुछ यहूदी ख्रिस्तुस के बहकाने पर लगातार गड़बड़ कर रहे थे, इस कारण [क्लोदियुस ने] उन्हें रोम में से निकाल दिया।''[2] ''ख्रेस्टुस'' शब्द यूनानी भाषा के *chrestos* से लिया गया है जिसका अर्थ ''दयालु, प्रेम करने वाला'' है जो स्पष्टतया स्तिफनुस की यीशु के नाम ''ख्रिस्ट'' *christos* इब्रानी शब्द *mashiach* जिसका सामान्य अर्थ ''मसीहा'' है। हम पक्का नहीं कह सकते पर ऐसा लगता है कि टरटुनियुस रोमी यहूदियों और यहूदी मसीहियों के बीच के झगड़ों की बात कर रहा था जिसे उसने सोचा कि वे ''ख्रेस्टुस'' द्वारा भड़काए गए थे। रोमी लोग यहूदियों के आपसी झगड़ों से कोई लेन देन नहीं रखते थे इस कारण यह जानने की कोशिश करने पर भी कि क्या हो रहा है आमतौर पर उन्हें इसकी समझ नहीं आती थी (देखें प्रेरितों 23:26-30; 25:13-22)। स्युटोनियुस ने इतना अधिक नहीं बताया पर उसने यीशु के में जागरूकता को दिखाया है चाहे उसे स्पष्ट समझ नहीं थी कि वास्तव में यीशु कौन था। एक और मूर्तिपूजक स्रोत इससे भी दिलचस्प है।

112 ईस्वी में बितुनिया राज्य के रोमी हाकिम प्लाइनी ने सम्राट ट्राजन के नाम एक पत्र लिखा जिसमें उससे पूछा गया कि वह उन लोगों के साथ कैसे पेश आए जिन पर मसीह होने का आरोप लगा। इतिहास में यहां पर, मसीहियत एक अवैध धर्म था, अधिकतर इस कारण क्योंकि मसीही लोग सम्राट की मूर्ति के आगे बलिदान करने से इनकार करते थे, क्या उसे उन्हें सताव के लिए ढूंढ़ ढूंढ़कर लाना चाहिए या उनके साथ तभी व्यवहार करना चाहिए यदि उन्हें उसके सामने पेश किया जाए और औपचारिक रूप में उन पर आरोप लगाया जाए? हमारे पास ट्राजन का उत्तर है जिसने क्लाइनी को दूसरा तरीका अपनाने का निर्देश दिया। प्लाइनी के लम्बे पत्र में से एक टुकड़ा विशेष दिलस्पी का कारण है। मसीही आराधना सभाओं का वर्णन करते हुए उसने कहा:

> ... प्रकाश होने से पूर्व वे एक ठहराए हुए दिन इकट्ठे होते थे जब वे मसीह के लिए अदल-बदल कर आयतों में गाते थे, जैसे किसी देवता के लिए हो और अपने आप किसी दुष्ट कार्य के साथ नहीं, बल्कि एक गम्भीर शपथ से बांधते थे, परन्तु किसी छल, चोरी या व्यभिचार में लिप्त होने के लिए नहीं, न कभी अपनी बात से मुकरने, न उस भरोसे का

> इनकार करने के लिए जब उन्हें इसे देने के लिए पुकारा जाए; जिसके बाद अलग होना उनकी कथा थी और फिर भोजन में भाग लेने के लिए फिर से इकट्ठे होना–परन्तु साधारण और निर्दोष प्रकार का कोई भोजन। परन्तु आदेश के प्रकाशन के बाद उन्होंने यह कार्य भी त्याग दिया था, जिसके द्वारा, तेरे आदेशों के अनुसार मैंने भी राजनैतिक सम्बन्धों से नाता रखने की मानाही की।[3]

प्लाइनी ने ''मसीह'' का उल्लेख नाम से किया, उसे इस बात की समझ थी कि आराधना इस आरम्भिक समय में ही ''ऐसे ... जैसे ईश्वर की'' करते थे। यह इस बात का संकेत देता है कि यीशु की ईश्वरीयता में विश्वास बाद के किसी बहस के निकले निचोड़ का नतीजा नहीं था। पहली सदी के मसीही लोग मसीह के प्रति अपने ऊपर अत्यधिक नैतिक जीवनशैली होने के रूप में देखते थे। ''मसीह'' का उल्लेख केवल प्लाइनी ने यही नहीं किया; बल्कि पत्र में उसने कहीं और कहा कि कुछ लोग आरोप लगाए जाने पर दण्ड से बचाव के लिए ''मसीह को कोसते'' थे।

दो मूर्तिपूजक लेखक जिसका महत्व इतना नहीं है और उन्होंने यीशु के विषय में लिखा है कि समोसाटा के सैल्सस और लूइसियन थे, जिनमें से किसी का भी यीशु के लिए या मसीहियत के लिए कोई सम्मान नहीं था। सैल्सस की पुस्तक ट्रु डिसकोर्स (177–78 ईस्वी) का पता हमें तीसरी शताब्दी के अपोलोपिस्ट ओरिगन के लेखों के एक उदाहरण से चलता है ओरिगन के अनुसार सैल्सस ने एक यहूदी और यीशु के बीच वार्तालाप का आविष्कार किया, जिसमें यहूदी व्यक्ति ने दावा किया कि यीशु कुंवारी से जन्मा नहीं था (जैसा मत्ती और लूका रचित सुसमाचार में दावा है), बल्कि यह कि मरियम एक व्यभिचारिणी थी जिसे ''पंथेरा'' नामक एक सिपाही ने गर्भवती कर दिया था। यह शब्द ''कुंवारी'' (*parthenos*) के लिए यूनानी शब्द एक नाटक होगा। सैल्सस ने यह भी दावा किया कि यीशु ने मिस्र में जादू सिखा, फिर फलस्तीन में लौट गया और वहां उसने अपने आपको ईश्वर घोषित कर दिया।

लुसियन जो 115–200 ईस्वी के आस–पास रहा, ने कहा कि मसीही लोग यीशु को ईश्वर की तरह मानते थे और फिर उन्होंने ''उस आदमी के लिए जो संसार में एक नया सम्प्रदाय खड़ा करने के कारण फलस्तीन में क्रूस पर चढ़ाया गया था'' की बात करके एक बेकार हवाला दिया।[4] यह स्पष्ट नहीं है कि लुसियन का मत था या नहीं कि क्रूस पर चढ़ाया गया व्यक्ति यीशु ही था। यह स्पष्ट है कि न सैल्सस और न लुसियन को मसीहियत की या यीशु की कोई परवाह थी। पर कम से कम उनके लेखों में इतनी गवाही तो है कि वह जिया, यानी उसके कुंवारी से जन्मे होने की बात को माना जाता था और यह कि उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था।

यीशु के विषय में यहूदी स्रोत

सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन यहूदी लेखक जोसेफस था, जो पहली शताब्दी ईस्वी के अन्त का एक इतिहासकार है। जोसेफ़स ने यहूदी इतिहास को विस्तार से लिखा और नये नियम के अलावा हमारे पास यीशु के समय में यहूदी मत की जानकारी का यह बढ़ा स्रोत है। 93–94 ईस्वी में प्रकाशित *एंटिक्विटीज़ ऑफ़ ज्यूस* नामक 20 अंकों वाली अपनी पुस्तक में उसने अनानत (या अनाह) नामक प्रदान याजक के सम्बन्ध में कहा:

> और इस प्रकार उसने महासभा के न्यायों को बुलाया और उनके सामने याकूब नामक एक व्यक्ति को बुलवाया, जो उस यीशु का भाई था जिसे मसीह कहा जाता था और कुछ और लोगों को उसने उन पर व्यवस्था का उल्लंघन करने का आरोप लगाया और उन्हें पथराव किए जाने के लिए दे दिया।[5]

ध्यान दें कि जोसेफस को यीशु का नाम भी पता था और उसे यह भी पता था कि ''ख्रिस्त (मसीहा)'' कहा जाता था। उसने नये नियम की जानकारी की पुष्टि भी की थी कि यीशु का याकूब नामक एक भाई था (मत्ती 13:55; गलातियों 1:19)।

जोसेफस की एंटिक्विटीज़ में यीशु का एक और हवाला विवादास्पद है:

> लगभग इसी दौरान एक बुद्धिमान मनुष्य, *यदि सचमुच उसे मनुष्य कहा जाना आवश्यक है,* यीशु रहता था, क्योंकि वह अद्‌भुत कार्य करने वाला व्यक्ति था और ऐसे लोगों का सिखाने वाला था, जो सच्चाई को आनन्द से स्वीकार कर लेते हैं। उसने कई यहूदियों और कई यूनानियों को जीत लिया था। *वह मसीहा था,* हमारे बीच में से ऊंचे पदों वाले लोगों द्वारा उस पर आरोप लगने की बात सुनकर, पिलातुस ने जब उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने का दण्ड दिया तो जो उससे प्रेम करने के लिए आने वाले सबसे पहले लोग थे, उन्होंने उसके लिए अपने मोह को नहीं छोड़ा। तीसरे दिन वह उन्हें जीवित दिखाई दिया, *क्योंकि परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं में उसके विषय में इन और असंख्य अन्य अद्‌भुत बातों की भविष्यवाणी की थी*। और मसीही लोगों का कबीला जो उसके नाम से कहलाता है, आज तक अलोप नहीं हुआ है।[6]

जो बात इस पद्य को विवादास्पद बनाती है वह यह स्पष्ट दावा है कि यीशु मनुष्य से ऊपर था और यह कि वह इस्राएल का मसीहा था, जो मरे हुआ में से जी उठा था। समस्या यह है कि मसीही न होने के कारण जोसेफ़स इस पर विश्वास नहीं करता होगा। जो कुछ हमारे पास है, उससे जोसेफ़स का स्पष्ट एक प्रतीत होता है, जिसमें उसने यीशु का उल्लेख किया, जिस पर एक मसीही सम्पादक ने नये सिरे से काम किया है। इस पद्य को फिर से पढ़ें और स्पष्ट मसीही भागों को (जिन्हें इटैलिक किया गया है, छोड़ दें), और आपके पास सम्भवतया जोसेफस के लेख के अधिक सही प्रतिनिधित्व है। परन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि जोसेफ़स चाहे अविश्वासी था पर उसने यीशु के विषय में कई तथ्यों की पुष्टि की, जो उस समाचार पुस्तकों में भी दर्ज हैं। ''वह गुरु था'' (लूका 18:18), उसके चेले यहूदियों और अन्यजातियों दोनों में थे (यूहन्ना 12:20, 21), उसे यहूदी अगुओं के ''सुझाव'' पिलातुस द्वारा मृत्यु दण्ड दिया गया (मत्ती 27:1, 2) और उसे क्रूस पर चढ़ाया गया (मत्ती 27; मरकुस 15; लूका 23; यूहन्ना 19)। जोसेफस ने भी इस बात की पुष्टि की कि मसीह के चेले यहूदी मत के भीतर एक बहुत बड़ा समूह था और उन्हें ''मसीही'' कहा जाता था (प्रेरितों 11:26; 1 पतरस 4:16)। यह तो जानकारी का भण्डार है।

यीशु के सम्बन्ध में जोसेफ़स का एक और पद्य दिलचस्प है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले पर उसे उस व्यक्ति के रूप में वर्णित करते हुए जिसने यहूदियों को धर्मी जीवन बिताने की ताड़ना दी और जो न्याय, पवित्रता और बपतिस्मे का प्रचार करता था, इस इतिहासकार ने विस्तार से लिखा है,[7] उसने लिखा कि लोगों पर उसके प्रभाव के कारण हेरोदेस अन्तिपास यूहन्ना से भय

खाता था (देखें मरकुस 6:19, 20)। जिसने अन्ततः उसे जेल में डालकर उसकी हत्या कर दी। यह यूहन्ना और उसके प्रचार और नये नियम की बात से बिल्कुल मेल खाता है, चाहे इस लेख में जोसेफ़स ने यीशु के साथ यूहन्ना के सम्बन्ध का उल्लेख नहीं किया।

यीशु के विषय में एक और महत्वपूर्ण स्रोत तालमुड है। लेखों का यह संग्रह पांचवीं से छठी शताब्दियों के बीच का है, चाहे इसमें पाए जाने वाले अधिकतर फैसले और टिप्पणियां एक या अधिक सदी पहले लिखे गए थे। यीशु के कई हवाले उसे अद्‌भुत काम करने वाले के रूप में स्वीकार करते हैं, परन्तु आम दावा यही है कि वह एक जादूगर था। तालमुड में कहीं इस बात से इनकार नहीं किया गया कि यीशु था या उसने आश्चर्यकर्म किए, परन्तु लेखक इस बात से इनकार करते हैं कि उसकी सामर्थ परमेश्वर की ओर से थी (देखें मरकुस 3:22)।

इन स्रोतों पर निष्कर्ष

तो फिर यीशु के विषय में इन मूर्तिपूजक और यहूदी स्रोतों पर क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(1) *वे इस बात की पुष्टि करते हैं कि वह वास्तव में हुआ।* रोमी और यहूदी इतिहासकारों के प्रमाण के प्रकाश में यीशु संसार में रहा। कई बार हम ऐसे दावे भी सुन सकते हैं कि यीशु हुआ ही नहीं या इतिहास से हमें पता नहीं चल सकता कि वह सचमुच में संसार में रहा हो। यह दावा करने वाले लोग या तो प्रमाण से अनभिज्ञ हैं या वे इसे स्वीकार करने से इनकार करते हैं।

(2) *ये स्रोत सुसमाचार में दिए गए यीशु के कई मूल तथ्यों की पुष्टि करते हैं।* वे इस बात को साबित करते हैं कि पहली शताब्दी ईस्वी में फलस्तीन में वह रहता था, याकूब नामक उसका एक भाई था, उसकी मृत्यु की मांग यहूदी अगुओं ने की थी और पिलातुस के शासन में रोमियों द्वारा उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था। इसके अलावा वे इस बात की भी पुष्टि करते हैं कि उसे गुरु माना जाता था कि उसकी सेवकाई आश्चर्यकर्म करने वाले के रूप में प्रसिद्ध थी, उसके अनुयायी उसे मसीहा मानते थे, उसकी आराधना परमेश्वर के रूप में होती थी और उसके पीछे चलने वाले लोगों को ''मसीही'' कहा जाता था। गैर मसीही स्रोत हमें कोई अतिरिक्त जानकारी नहीं देते जो पहले से सुसमाचार की पुस्तकों में हो, परन्तु नये नियम से उनकी इस जानकारी का मेल खाना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन स्रोतों से मिली है जिन पर मसीहियत के पक्ष लेने वाले होने का आरोप नहीं लगाया जा सकता।

टिप्पणियां

[1]टैक्टिस *एन्नलस* 15.44.2-8. [2]स्युटोनियुस *क्लॉदियुस* 25.4. [3]प्लाइनी *लैटर्स* 10.96. [4]लूसियन *दि पासिंग ऑफ़ पेरेग्रिन्युस* 11. [5]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 20.9.1. [6]वही, 18.3.3. [7]वही, 18.5.2.